संकुल केंद्रः कक्षा और शिक्षक में बदलाव

✍ योगेंद्र दाधीच

हम स्कूल में जो बदलाव चाहते हैं उसका माध्यम शिक्षक ही है। बदलाव चाहे व्यवस्थागत हों या अकादमिक, दोनों स्तरों पर शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न कारणों से व्यवस्थागत बदलावों में तो वे अपनी भूमिका निभाते नजर आते हैं लेकिन अकादमिक स्तर पर यह परिलक्षित नहीं होता। वास्तव में पहले स्तर पर बहुत सारी बातें केवल आदेश से संभव हो जाती हैं, लेकिन अकादमिक स्तर पर संवाद और विमर्श की आवश्यकता होती है। शिक्षक से संवाद कहां हो और कैसे हो, यह एक बड़ा प्रश्न है। इस अनुभव में इसका जवाब खोजने का प्रयत्न किया गया है।

मुझे ऐसा महसूस होता है कि काफी सारे शिक्षक कक्षाओं में बेहतर व वैकल्पिक तौर–तरीकों की जरूरतों को स्वीकार तो करते हैं परंतु अनुभव न होने के कारण वे इनको अपनाने में असहज व असमर्थ महसूस करते हैं। दूसरी तरफ एक समय में एक से अधिक कक्षाओं को संभालने और पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव उन्हें उनके परंपरागत तौर–तरीकों पर ले जाने के लिए मजबूर करता है।

आवश्यकता है कि शिक्षकों को इस दिशा में सोचने–विचारने की स्वायत्ता मिले। यह तभी संभव है जब उन्हें आपस में संवाद करने का एक नियमित मंच उपलब्ध हो। इस मंच के माध्यम से उनके लिए अध्ययन हेतु पर्याप्त व गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध हो। इसकी दूसरी अनिवार्य शर्त है कि मंच का संचालन कक्षा शिक्षण पर एक वैकल्पिक समझ रखने वाले अनुभवी व्यक्तियों के साथ मिलकर किया जाए।

सर्व शिक्षा अभियान में संकुल केंद्र के नाम से ऐसे ही एक मंच की संकल्पना की गई है। पहले इसे नोडल के नाम से भी जाना जाता था। परंतु विडंबना यह है कि यह सदैव उपेक्षित रहा है। शैक्षिक दृष्टि से इसने स्कूलों में कोई योगदान नहीं किया। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत संकुल संदर्भ केंद्र को कुछ खास अपेक्षाओं के साथ संकल्पित किया गया था। इसमें निहित था कि यह एक संदर्भित अकादमिक केंद्र के रूप में विकसित होगा जो कि शिक्षकों के अकादमिक संबलन में मदद करेगा, विभिन्न विषयों पर शिक्षकों के साथ काम करने वाले संदर्भ व्यक्तियों के समूह को विकसित करेगा, शिक्षकों हेतु आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण आयोजित कर सकेगा तथा शिक्षकों हेतु मासिक बैठकों का आयोजन करेगा जिनका उद्देश्य विभिन्न अकादमिक मुद्दों पर चर्चा करना व स्कूल की बेहतरी के लिए आवश्यक कार्यनीति तैयार करना होगा। (सर्व शिक्षा अभियान द्वारा वर्ष 2008 में बी.आर.सी./सी.आर.सी. की भूमिका हेतु जारी फ्रेमवर्क के अनुसार।)

मगर यह हुआ नहीं। हम सभी जानते हैं कि बी.आर.सी./सी.आर.सी. का मुख्य काम सूचनाएं प्राप्त करना व इन्हें आगे भेजना ही होकर रह गया है।

संकुल संदर्भ केंद्र की आवश्यकता पर जोर देते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या दस्तावेज इंगित करता है कि इस तरह के केंद्र की स्कूलों के बेहतर विकास के लिए जरूरत है, "स्कूल स्तर की अकादमिक योजना के विकेंद्रीकरण और पाठ्यचर्या प्रसार में बच्चों की जरूरतों तथा शिक्षकों के सक्रिय और रचनात्मक सहयोग को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि संकुल संदर्भ केंद्रों को सक्रिय किया जाए ताकि वे इसमें

अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। साथ ही साथ ये केंद्र अपनी स्थानीय जरूरतों के अनुसार कार्यशालाएं व कार्यक्रम आयोजित कर सकें।"

दस्तावेज के अनुसार, "संकुल केंद्रों की जिम्मेदारियों को दो हिस्सों में विभाजित करके देखा जा सकता है। पहला है व्यवस्थागत काम और दूसरा है अकादमिक काम।" व्यवस्थागत काम तो ये केंद्र करते रहे हैं जैसे कि स्कूलों की डाक को एकत्र करना, स्कूलों तक सूचनाएं भेजना या स्कूलों में निर्माण कार्य को पूरा करवाना आदि। यहां अकादमिक काम से आशय ऐसे कामों से है जो शिक्षक एवं स्कूल को इस तरह से सक्षम बना सकें कि वह न केवल अपने स्कूल के वातावरण में जरूरी सुधार कर सके अपितु उन सुधारों को कक्षा–कक्ष के स्तर पर साकार कर सके। और यह मात्र किसी एक प्रशिक्षण या शिक्षक संदर्शिका जैसा कैप्सूल बनाने से संभव नहीं है। इसके लिए एक ऐसा तंत्र विकसित करना होगा जो शिक्षक को लगातार न केवल मदद कर सके अपितु उनके लिए ऐसा मंच बन सके जो शिक्षक की अकादमिक एवं प्रशासनिक समस्याओं को संबोधित करने के एक साझे मंच के रूप में स्थापित हो सके। जहां शिक्षक अपने शैक्षिक अनुभवों पर पुनर्चिंतन कर सकें।

'शिक्षा का अधिकार' अधिनियम भी बी.आर.सी./सी. आर.सी. जैसे संस्थानों को और अधिक क्रियाशील व जीवंत बनाने पर जोर देता है।

सैद्धांतिक स्तर पर हम सभी इससे सहमत हैं कि शिक्षकों के ऐसे समूह इन संकुल केंद्रों से तैयार हों जो जमीनी स्तर पर शैक्षिक माहौल में परिवर्तन ला सकें परंतु व्यावहारिक स्तर पर हमें इसके लिए विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। क्या इनको सक्रिय किया जाना संभव भी है और यदि ये सक्रिय होते हैं तो इनके मुद्दे क्या हो सकते हैं? उन मुद्दों को हल करने की प्रक्रियाएं या तौर–तरीके क्या हो सकते हैं? किस तरह से उनको हल किया जाएगा? जैसे तमाम सवाल जहन में आते हैं।

मेरा अनुभव यह कहता है कि एक अच्छा संकुल संदर्भ केंद्र होने का पैमाना है कि वह अपने क्षेत्र में आने वाले प्रत्येक स्कूल को लगातार अकादमिक मदद उपलब्ध करवा पाए। सभी स्कूलों के शिक्षक संकुल पर इकट्ठा होकर अकादमिक संवाद करते हुए एक–दूसरे की मदद के लिए आगे आ पाएं और साथ ही साथ संकुल एक ऐसा स्थान बने जहां से बच्चों को सीखने–सिखाने में वांछित संदर्भ पुस्तकें एवं सहायक सामग्री उपलब्ध हो पाए या संकुल उनको तैयार करने में अपनी भूमिका निभा पाए। मैं इसे एक उदाहरण से समझाना चाहूंगा जिसे मैंने व्यक्तिगत स्तर पर देखा और समझा है।

यह उदाहरण राजस्थान के बारां जिले का है। जहां इसे व्यावहारिक स्तर पर ''क्वालिटी एज्यूकेशन प्रोग्राम, बारां'' ने जिले व स्थानीय शैक्षिक तंत्र की मदद से संभव बनाया था। मैं यहां पर संकुल केंद्रों पर उसके केवल एक काम यानी बैठकों के आयोजन व दिनभर उनमें होने वाली चर्चाओं के उदाहरणों के माध्यम से अपनी बात को समझाने का प्रयास करूंगा। एक अच्छा संकुल कैसे विकसित किया



क्यू.ई.पी.

क्वालिटी एज्यूकेशन प्रोग्राम *का ताना–बाना शिक्षा की गुणवत्ता में बेहतरी तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की हर बच्चे तक पहुंच के मकसद से बुना गया था। इस कार्यक्रम ने विद्यालय को सतत रूप से विकसित होने वाले एक सामाजिक संस्थान के रूप में देखा। विद्यालय के विकास से आशय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा सकने वाली सक्षम इकाई बनने की दिशा में बढ़ने से है जो सतत अकादमिक मदद, शिक्षकों की क्षमताओं व समझ में वृद्धि और समुदाय के सहयोग की मांग करता है। इस मांग की दृष्टि से कार्यक्रम में अकादमिक मदद के लिए जिले में उपलब्ध सी.आर.सी., बी.आर.सी. व डाइट के साथ मिलकर प्रभावी तंत्र विकसित करने की संकल्पना थी। यह सोचा गया था कि यह तंत्र दो तरह से विद्यालयों के विकास में योगदान देगा– पहला, विद्यालय स्तर पर होने वाले कामों (शिक्षण, सामग्री निर्माण, समुदाय सहयोग) में सीधे मदद उपलब्ध कराए और विद्यालय में काम के दौरान उपजे अनुभवों से सी.आर.सी., बी.आर.सी. व डाइट को नई दृष्टि पैदा करने में मदद करके। दूसरा, सेवाकालीन प्रशिक्षणों के द्वारा शिक्षकों की क्षमतावर्धन में मदद करे। अर्थात अकादमिक मदद का ऐसा व्यवस्थित व प्रभावी तंत्र बने जो दो तरफा मदद व आपसी समन्वयन पर आधारित हो। जिसमें एक तरफ विद्यालयों में उपजे अनुभव डाइट, बी.आर.सी. व सी.आर.सी. को विकसित करने में मदद करें व इससे बनी समझ को सेवाकालीन प्रशिक्षणों में शामिल कर उन्हें बेहतर व सार्थक बनाए तथा दूसरी तरफ सेवाकालीन प्रशिक्षणों की रोशनी में विद्यालयों में होने वाले काम को सार्थक बनाने, उसके प्रभाव व औचित्य को देखने का काम करे।*

जा सकता है, उसकी कार्यप्रणाली किस तरह की हो सकती है और उसके लिए किस तरह की व्यवस्थाओं आदि की जरूरत होती है। यह भी समझने की कोशिश होगी कि किस तरह से संकुल और स्कूल का रिश्ता बनता है और यह रिश्ता किस तरह से एक कक्षा को प्रभावित करता है।

यह क्यू.ई.पी. के उन दिनों की बात है जब बारां में किसी भी नए काम को लेकर सिस्टम एवं उससे जुड़े व्यक्तियों में घोर निराशाएं थीं। परंतु धीरे–धीरे कार्यक्रम में काम कर रहे साथियों के सिस्टम एवं शिक्षकों के साथ हुए निरंतर संवाद ने एक ऐसा माहौल तैयार किया जिसमें कि शिक्षकों की संकुल केंद्र पर आयोजित की जाने वाली मासिक बैठकों में नियमित भागीदारी होना आरंभ हुई और संकुल केंद्र भी इसके लिए तैयार हुआ।



संकुल पर आयोजित होने वाली शुरुआती बैठकों में जब शिक्षक आते थे तो उन्हें लगता था कि कार्यक्रम के साथी ही योजना तैयार कर उन्हें दे जाएं और वे उसी अनुसार काम कर लेंगे। कुछ इसी तरह की राय संकुल केंद्र प्रभारी (सी.आर.सी.) की भी होती थी। परंतु परियोजना सदस्यों को यह स्पष्ट था कि केवल बताने मात्र से कुछ होने वाला नहीं है, न ही यह एक तरफा संवाद या भाषण से संभव हो सकता है। यह संभव होगा तो केवल एक दीर्घकालीन योजना के साथ व्यवस्थित तरीके से विभिन्न मुद्दों पर शिक्षकों में संवाद एवं पुनर्चिंतन की आदत के विकास के साथ ताकि उनमें एक समूह की भावना विकसित हो।

धीरे–धीरे स्थिति यह आई जब शिक्षकों ने स्वीकार किया कि प्रत्येक विद्यालय व कक्षा में बच्चों का स्तर व स्थिति अलग–अलग होती है, अतः केवल कुछ चीजों को बताने भर से काम नहीं चलेगा अपितु सबको मिलकर कुछ साझी समझ के साथ अपनी अपनी परिस्थितियों में चीजों के

हल तलाश करने होंगे। इस हल को तलाश करने, उसे करके देखने और फिर से उस पर बात करने के लिए एक समूह की आवश्यकता थी जो मिलकर इन चीजों पर बात कर सके। यह समूह विकसित हुआ संकुल केंद्र के रूप में।

उस समय हुए काम के दौरान इन संकुल केंद्रों पर आए बदलावों को देखा जा सकता था। मार्च 2011 में यह कार्यक्रम कुछ अपरिहार्य कारणों के चलते बंद करना पड़ा। फिर भी उससे उपजे कुछ अनुभवों पर चर्चा करते हुए एक सैद्धांतिक तस्वीर बनाई जा सकती है कि संकुल केंद्र कैसा होना चाहिए। इस सारी मेहनत का नतीजा यह रहा कि शिक्षक स्वयं आपसी बातचीत के आधार पर बैठक का दिन व समय तय करने लगे। जबकि सामान्य हालात में बैठकों के लिए आदेश से शिक्षकों को बुलाया जाता है और उनसे अपेक्षा यह होती है कि उसमें शामिल होना है। परंतु यह बात महत्त्वपूर्ण है कि यदि शिक्षकों की सहमति से कोई काम हो और उनके पास इस बात का तार्किक आधार है कि वे उस काम को क्यों कर रहे हैं, तो उनकी कार्यप्रणाली और चिंतन पर दूरगामी असर पड़ता है। इससे एक तरह की अपनेपन की भावना विकसित होती है। इसी कार्यप्रणाली का परिणाम था कि संकुल केंद्र पर आयोजित होने वाली बैठकों में अधिकांश शिक्षक तय समय पर आते थे और जो शिक्षक किन्हीं कारणों से नहीं आ सकते थे वे अपनी सूचना अन्य साथी शिक्षकों के माध्यम से देते थे। इन बैठकों में स्कूल की परिस्थितियों पर बात करने के साथ ही साथ स्कूल के विकास की आगामी कार्य योजना भी तैयार की जाती थी और अकादमिक दृष्टि के विकास हेतु कुछ शिक्षा के सामान्य मुद्दों को इसका हिस्सा बनाया जाता था।

बैठक का आरंभ बाल गीतों, चेतना गीतों, लोक गीतों, लोक कथाओं से होता था। शिक्षक व शिक्षिकाओं की इसमें धीरे–धीरे भागीदारी बढ़नी शुरू हुई थी। शुरुआती बैठकों में तो शिक्षक इसे केवल एक माहौल निर्माण बनाने वाली प्रक्रिया के तौर पर ही देखते थे। पर इन बैठकों ने उन्हें यह समझने का अवसर दिया कि बच्चों के भाषा शिक्षण, उनकी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को बढ़ाने में इन गीतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है और इनमें बच्चों की पूरी भागीदारी होनी चाहिए। इससे स्कूल की सभा में बहुत आवश्यक बदलाव शिक्षकों द्वारा किए गए। संकुल केंद्र पर आयोजित ये बैठकें शिक्षकों को नियमित रूप से यह



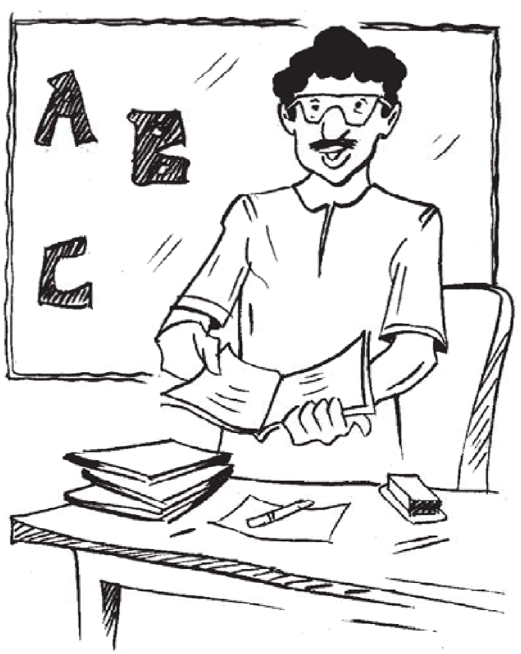
अवसर प्रदान करती थीं कि वे इस तरह की स्वयं की तैयारी भी धीरे–धीरे कर सकें। उनमें इस तरह की काबिलियत विकसित हो कि वे अपने विद्यालय में बच्चों के साथ मिलकर गाने का, अभिनय करने का या फिर सफाई की प्रक्रियाओं में शामिल होने का साहस कर सकें। शेष समय में विद्यालय या शिक्षण कार्य के दौरान आ रही दिक्कतों को समूह में साझा किया जाता अथवा विगत माह हुई बैठक में चिह्नित मुद्दे पर बातचीत की जाती, जैसे–शिक्षा का अधिकार अधिनियम, विद्यालय प्रबंधन समिति या फिर 'सजा क्यों' या फिर किसी विषय संबंधी अवधारणाओं पर बातचीत की जाती थी।

बैठक में उपस्थित प्रत्येक शिक्षक अपनी कक्षाओं में हो रहे विषयवार अध्यापन कार्य की प्रगति को अपने अन्य साथियों के साथ साझा करता था। वह यह भी बताता था कि विगत माह उसने किन शिक्षण बिंदुओं पर कार्य किया और कक्षावार बच्चों के सीखने की क्या स्थिति है। इस दौरान कई शिक्षक कार्यक्रम के साथियों द्वारा किसी खास अवधारणा के शिक्षण के लिए बताए गए तरीकों को लेकर हुए अनुभवों व समस्याओं को भी बिना किसी हिचकिचाहट के साझा करते। उदाहरण के तौर पर एक शिक्षक ने एक बैठक में भिन्न सिखाने के तरीके पर हुई बातचीत के अनुसार

इसे अपनी कक्षा में प्रयोग करके देखा परंतु उसका मानना था कि भिन्न सिखाने का पुराना तरीका ही इससे बेहतर था और उससे बच्चे जल्दी सीख जाते थे। इस पर उसके अन्य साथियों ने उससे जानना चाहा कि इस्तेमाल किया गया वह तरीका सभी को बताए। इस प्रक्रिया में उन चीजों को चिह्नित किया गया जहां–जहां गलती हो रही थी। इससे व्यक्ति में आत्मविश्वास विकसित होने के साथ–साथ एक खास तरह का आत्मानुशासन भी समूह में बनता था।

इसी प्रकार से एक अन्य बैठक में एक शिक्षक ने भाषा शिक्षण से संबंधित अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि पहले वह बच्चों को वर्णमाला, बिना मात्रा के शब्द, मात्रा के शब्द, बारहखड़ी से काम शुरू करवाता था जिसमें कई बच्चे ठीक से पढ़ना–लिखना नहीं सीख पाते थे। लेकिन जब से उसने अपने शिक्षण में चित्र कार्ड सैट व मात्रा कार्ड सैट का उपयोग करना आरंभ किया है तब से एक तो बच्चों को काम में मजा आने लगा है और दूसरा वे अब वर्णों, शब्दों को पहचानकर पढ़ने व लिखने लगे हैं। उसकी कक्षा के बच्चे उत्सुकता से इंतजार करते हैं। शिक्षक ने माना कि उसे अब बच्चों को पढ़ाने में ज्यादा आनंद आता है।

अपनी आगामी कार्य योजना शिक्षक उपसमूहों में बैठकर तैयार करते। योजना तैयार करते समय वे अपनी कक्षाओं के बच्चों के स्तर को ध्यान में रखते हुए यह कार्य



करते थे। आगामी माह की योजना को भी प्रत्येक शिक्षक द्वारा बैठक में अन्य सभी शिक्षक साथियों के साथ साझा किया जाता।

शिक्षण कार्य पर शिक्षक खुलकर अपने विचार रखने लगे। जैसे एक संकुल की बैठक में शिक्षक ने कहा – ''चाइल्ड ट्रैकिंग सर्वे (CTS) और साक्षर भारत ने स्कूल का सारा काम प्रभावित कर रखा है। सरकार नहीं चाहती कि शिक्षण कार्य हो। वह तो चाहती है कि आंकड़ों का काम पूरा हो जाए। हम शिक्षकों को भी समझना चाहिए कि जो शिक्षक इस काम में नहीं है वह तो शिक्षण कार्य करवा सकता है लेकिन बाकी शिक्षक भी यह सोचते हैं कि 15 अगस्त तक तो पढ़ाई होगी ही नहीं उसके बाद ही शिक्षण कार्य कराना प्रारंभ करेंगे जो कि गलत है। हमें बच्चों के हित को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य कराना चाहिए।''

संकुल केंद्र पर आयोजित बैठकों के साथ शिक्षकों के जुड़ाव व आत्मानुशासन की झलक इस घटना से महसूस की जा सकती है – एक संकुल बैठक किन्हीं कारणों के चलते लगभग एक घंटे की देरी से आरंभ हुई। काम करते हुए शिक्षकों को इस बात का अहसास हो गया था कि जितना काम है उसके लिए पूरा समय रुक कर काम करना होगा। इस पूरी स्थिति को ध्यान में रखते हुए सभी शिक्षकों ने दो बार चाय का ब्रेक नहीं किया, कमरे में ही बैठकर चाय पीते रहे तथा काम भी व्यवस्थित तरीके से चलता रहा। दोपहर का लंच ब्रेक 45 मिनिट का ही किया गया और ऐसा करने का निर्णय सभी शिक्षकों द्वारा लिया गया।

बैठकों में देखने को मिला कि आगामी योजना को तैयार करते समय कई बातों का विशेष तौर से ध्यान रखा जाता है जिनमें मुख्य रूप से विषयवार योजना बनाते समय विशेष रूप से चार चीजों पर फोकस किया जाता था – पहली बच्चों की सीखने की गति को ध्यान में रखना, दूसरी कौन–कौन–सी अवधारणाओं पर काम करेंगे, तीसरी इसके लिए तरीका कौन–सा इस्तेमाल करेंगे तथा चौथी इस हेतु किस प्रकार की सामग्री की जरूरत पड़ेगी। इसी प्रकार से सभा की योजना कुछ इस तरह से तय की जाती थी कि जिसमें ज्यादा से ज्यादा बच्चों की भागीदारी हो पाए। गतिविधियां ऐसी हों जो बच्चों की झिझक दूर करने, अभिव्यक्ति के ज्यादा से ज्यादा अवसर देने तथा बच्चों की भाषायी क्षमता विकसित करने में मदद कर पाएं।

हो रहे प्रयासों का स्कूलों में प्रभाव

संकुल पर बन रही योजना व कक्षा में किए गए काम की शेयरिंग के अनुसार स्कूलों में किस तरह के बदलाव हो रहे हैं इसको समझने के लिए मैंने एक राजकीय प्राथमिक विद्यालय का अवलोकन किया। यहां पर दो शिक्षक कार्यरत थे जिनमें से एक शिक्षक से मुलाकात पिछले माह हुई संकुल बैठक में हुई थी। विद्यालय समय पर आरंभ हुआ था व बच्चों की उपस्थिति यह दर्शा रही थी कि स्कूल में बच्चों की उपस्थिति नियमित रहती है। दोनों शिक्षकों ने संकुल बैठक में तय किए अनुसार ही प्रातःकालीन सभा का आयोजन किया। वे बीच–बीच में समन्वयन का कार्य करते रहे, शेष कार्य तो बच्चों ने ही किया कि कौन–से गीतों व कविताओं को गाना है, किसे गाना है इत्यादि। सभा मुझे काफी विविधताओं से भरी लगी और अधिकांश बच्चे इसमें ऊंघ नहीं रहे थे बल्कि धीरे–धीरे लय सुर के साथ गाने का अभ्यास भी हो रहा था।

कक्षा में भी दोनों शिक्षकों ने गतिविधियों व सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में किया। गणित शिक्षण में कक्षा 1 व 2 के बच्चों के साथ गिनना पर किए गए काम में ठोस वस्तुओं का उपयोग और समूहों में काम या फिर भाषा शिक्षण में चित्र–कार्ड सैट के माध्यम से विभिन्न शब्दों से बच्चों का परिचय करवाना हो।

कक्षा 4 व 5 के बच्चों के साथ भी भाषा पर काम करवाते हुए शिक्षक ने कक्षा 4 के बच्चों को समूहों में कहानियां पढ़ने को दीं और कक्षा 5 के बच्चों को पिछले दिन दिए गए अभ्यास कार्य को देखने में व्यस्त हो गए। बच्चों ने भी पूरे समय स्वयं को अपने काम से जोड़े रखा। शिक्षक ने पूरे समय व्यवस्थित रूप से दो कक्षाओं का संचालन एक साथ किया।

दोनों शिक्षकों का मानना था कि पहले भी संकुल केंद्र पर बैठकें हुआ करती थीं परंतु उनमें उनका काम केवल सूचनाओं के प्रपत्र जमा करवाकर लौट जाना ही होता था। क्यू.ई.पी. के लोगों की वजह से अब इन बैठकों में हम सभी शिक्षक मिलकर अपने काम की योजना बनाते हैं और विद्यालय व कक्षा शिक्षण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हैं।



उनका मानना था कि जिस प्रकार के रिश्ते आज स्कूलों व संकुल केंद्र के मध्य हैं इससे पूर्व इन दो संस्थाओं के मध्य सूचनाओं के संकलन से अधिक कभी कुछ रहा ही नहीं।

क्यू.ई.पी. तो बंद हो चुका है परंतु ये उदाहरण इस बात को रेखांकित करते हैं कि यदि हमें अपने विद्यालय में कुछ बदलाव करना है तो मदद के लिए संकुल संदर्भ जैसे मंच को विकसित करना होगा जो पदानुक्रम व्यवस्था को बनाने की बजाय शिक्षक के सहयोगी के तौर पर काम कर सके, उन्हें इस बात का भरोसा दिला सके कि वह उनकी अकादमिक जरूरतों को संबोधित कर सकता है। यह संकुल शिक्षकों के एक मंच की आवाज की तरह से विकसित हो, जहां शिक्षक एक समुदाय के तौर पर अपनी पहचान बना सके।

योगेंद्र दाधीच : दिगंतर, जयपुर की अकेडमिक रिसोर्स यूनिट में कार्यरत हैं।